

प्रारंभिक परीक्षा

एशियाई विकास बैंक (Asian Development Bank)

संदर्भ

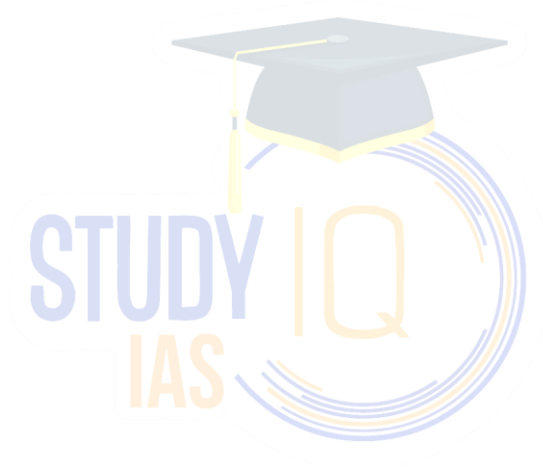
पाकिस्तान ने महिलाओं के वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए एशियाई विकास बैंक से 350 मिलियन डॉलर का ऋण लिया है। नौ महीनों में इसका कुल ऋण 76,000 बिलियन पाकिस्तानी रूपये तक पहुंच गया है।

एशियाई विकास बैंक (ADB) -

- **स्थापना:** 19 दिसंबर 1966 को हुई।
- **एशिया-प्रशांत क्षेत्र के लिए एक बहुपक्षीय विकास बैंक।**
- **इसका लक्ष्य समृद्ध, समावेशी, लचीला और टिकाऊ एशिया और प्रशांत क्षेत्र बनाना है।**
- **क्षेत्र में अत्यधिक गरीबी उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध।**
- **मुख्यालय:** मनीला, फिलीपींस।
- **सदस्यता:** 31 सदस्यों से शुरू हुई, अब 69 सदस्य हैं:
 - **49 क्षेत्रीय सदस्य (एशिया और प्रशांत):** भारत, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, आदि।
 - **20 गैर-क्षेत्रीय सदस्य:** यूरोप, उत्तरी अमेरिका और अन्य।
 - यूएनईएससीएपी सदस्यों, अन्य क्षेत्रीय और गैर-क्षेत्रीय संयुक्त राष्ट्र सदस्यों के लिए खुला है।
- **कार्य:** ऋण, अनुदान, तकनीकी सहायता, इक्विटी निवेश के माध्यम से सहायता प्रदान करता है।
 - **समर्थन:** सरकारों, निजी क्षेत्र, सार्वजनिक-निजी भागीदारी को।
 - **बढ़ावा:** सामाजिक और आर्थिक विकास
- **प्रशासन:**
 - **बोर्ड ऑफ गवर्नर्स** (प्रत्येक सदस्य देश के लिए एक) द्वारा शासित
 - यह बोर्ड 12 सदस्यों वाले **निदेशक मंडल (Board of Directors)** का चुनाव करता है:
 - 8 क्षेत्रीय सदस्यों (एशिया-प्रशांत) से
 - 4 गैर-क्षेत्रीय सदस्यों से
 - **अध्यक्ष का चुनाव 5 वर्ष के कार्यकाल के लिए किया जाता है, वह बोर्ड का अध्यक्ष होता है, तथा बैंक का संचालन करता है।**
 - **ADB के सभी अध्यक्ष जापानी रहे हैं (जापान इसका संस्थापक और सबसे बड़ा शेयरधारक है)।**
- **मतदान शक्ति:** भारत मतदान प्रणाली (विश्व बैंक की तरह) का उपयोग करता है
 - मतदान शक्ति पूंजी सदस्यता पर आधारित है
 - **शीर्ष 5 शेयरधारक:**
 - जापान – 15.6%
 - यूएसए – 15.6%
 - चीन – 6.4%
 - भारत – 6.3%
 - ऑस्ट्रेलिया – 5.8%
- **वित्तपोषण का स्रोत:** अंतर्राष्ट्रीय बांड बाजारों के माध्यम से पूंजी जुटाना
 - इसके अतिरिक्त निम्नलिखित द्वारा वित्त पोषित:

- सदस्य योगदान
- ऋण चुकौती
- प्रतिधारित कमाई

स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)



नव्या पहल (NAVYA Initiative)

संदर्भ

भारत सरकार ने भविष्य के लिए तैयार कार्यबल के लिए किशोरियों को कौशल प्रदान करने और उन्हें सशक्त बनाने के लिए विकसित भारत@2047 विजन के अंतर्गत नव्या पहल शुरू की है।

नव्या पहल के बारे में -

- **पूरा नाम:** युवा किशोरियों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से आकांक्षाओं का पोषण (NAVYA -Nurturing Aspirations through Vocational Training for Young Adolescent)।
- यह निम्नलिखित द्वारा एक संयुक्त पायलट पहल है:
 - महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (MWCD)
 - कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (MSDE)
- **प्रमुख विशेषताएँ:**
 - **लक्ष्य समूह:** 16-18 वर्ष की आयु वाली किशोरियां जिनकी न्यूनतम योग्यता 10वीं कक्षा हो।
 - **फोकस:** लैंगिक रूढ़िवादिता को तोड़ने के लिए विशेष रूप से गैर-पारंपरिक नौकरी भूमिकाओं में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना।
 - **कवरेज:** 19 राज्यों के 27 जिलों में कार्यान्वित किया जाएगा, जिनमें शामिल हैं:
 - आकांक्षी जिले
 - पूर्वोत्तर राज्यों के जिले
 - कमजोर और वंचित आबादी तक पहुंचकर समावेशन और क्षेत्रीय संतुलन पर जोर दिया जाता है।
- **कार्यान्वयन रणनीति:** इस पहल के अंतर्गत:
 - MWCD और MSDE के बीच सहयोग को औपचारिक रूप देना।
 - किशोरियों के लिए कौशल विकास प्रयासों पर अभिसरण को संस्थागत बनाना।
 - निम्नलिखित से समर्थन प्राप्त होगा:
 - प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)
 - अन्य प्रमुख कौशल विकास योजनाएं
- **महत्व:** इस पहल का उद्देश्य किशोरियों को सशक्त बनाना है ताकि वे प्राप्त कर सकें:
 - कौशल
 - आत्मविश्वास
 - अवसर
 - यह सुनिश्चित करता है कि किशोरियाँ भारत के विकसित भारत@2047 दृष्टिकोण के अंतर्गत एक:
 - विकसित
 - आत्मनिर्भर
 - समावेशी राष्ट्र की प्रमुख भागीदार बन सकें।

स्रोत: [PIB](#)

समाचार संक्षेप में

जीन वैरिएंट अल्जाइमर की शुरुआत में देरी करेगा

समाचार?

अल्जाइमर रोग की शुरुआत में देरी करने वाले एक दुर्लभ जीन वैरिएंट की पहचान की गई है, जो मस्तिष्क की सूजन को रोकने की अपनी क्षमता के कारण सुर्खियों में है - जो न्यूरोडीजेनेरेटिव विकारों का एक प्रमुख कारक है।

जीन वैरिएंट के बारे में - APOE3-R136S -

- अल्जाइमर रोग की शुरुआत में देरी करता है।
- मस्तिष्क की सूजन को कम करके काम करता है, जो न्यूरोडीजेनेरेशन का एक प्रमुख कारण है।
- विशेष रूप से **cGAS-STING** मार्ग को अवरुद्ध करता है, जो मस्तिष्क की जन्मजात प्रतिरक्षा प्रणाली का एक हिस्सा है जो अल्जाइमर जैसी बीमारियों में अति सक्रिय हो सकता है।

अल्जाइमर रोग के बारे में -

- एक प्रगतिशील न्यूरोडीजेनेरेटिव विकार जो स्मृति, सोच और तर्क को प्रभावित करता है।
- यह मनोभ्रंश का सबसे आम कारण है, जो दुनिया भर में 60-80% मामलों के लिए जिम्मेदार है।
- इससे मस्तिष्क कोशिकाओं के बीच संचार में व्यवधान उत्पन्न होता है, जिसके परिणामस्वरूप संज्ञानात्मक और दैनिक कार्य क्षमता में गिरावट आती है।

प्रारंभिक अल्जाइमर रोग (EOAD) क्या है?

- अल्जाइमर के अधिकांश मामले 65 वर्ष या उससे अधिक आयु के लोगों में होते हैं।
- हालांकि, लगभग **5-10% मामले इससे पहले उम्र में सामने आते हैं, जिन्हें प्रारंभिक-प्रारंभिक अल्जाइमर रोग (EOAD) कहा जाता है।**
- **EOAD की विशेषताएँ:**
 - यह रोग सामान्य अल्जाइमर की तुलना में तेज़ी से प्रगति करता है।
 - यह आमतौर पर उन व्यक्तियों को प्रभावित करता है जो अपने सक्रिय कार्य जीवन के वर्षों में होते हैं।
 - इसका मजबूत आनुवंशिक (genetic) संबंध होता है।

स्रोत: [IndianExpress](https://www.indianexpress.com)

रोन ग्लेशियर



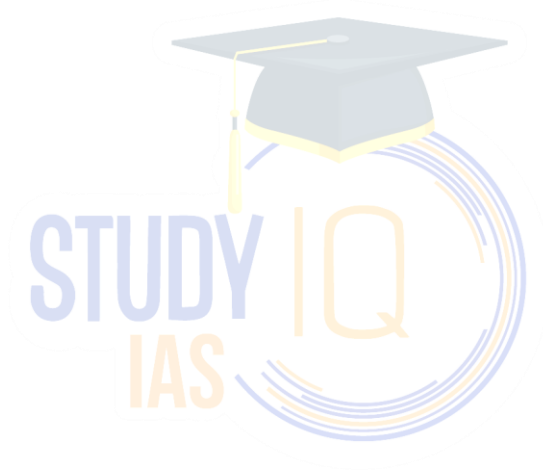
समाचार?

स्विट्ज़रलैंड के ग्लेशियर, जैसे कि **रोन ग्लेशियर**, जलवायु परिवर्तन के कारण तेज़ी से पिघलने की वजह से ऐसे **छेदों** का रूप ले रहे हैं जो **स्विस चीज़ (Swiss cheese)** जैसे दिखते हैं। ये छेद बर्फ के अंदर बनने लगे हैं, जिससे ग्लेशियर की संरचना कमजोर होती जा रही है।

रोन ग्लेशियर के बारे में -

- **स्विस आल्प्स में स्थित है।**
- यह उर्नर आल्प्स का सबसे बड़ा ग्लेशियर है।

	• यह रोम नदी के स्रोत के रूप में कार्य करता है। • यह जिनेवा झील का प्राथमिक योगदानकर्ता है, जो स्विट्स कैंटन वैलेस के सुदूर पूर्वी छोर पर स्थित है। • दम्मास्टॉक (3,630 मीटर) ग्लेशियर के ऊपर सबसे ऊँची चोटी है। स्रोत: TheHindu
--	---



संपादकीय सारांश

एक्सिओम 4 मिशन भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए क्या मायने रखता है?

संदर्भ

एक्सिओम-4 मिशन हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर पहुंचा।

एक्सिओम 4(Axiom 4 Mission) मिशन के बारे में -

- यह अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए चौथा निजी अंतरिक्ष यात्री मिशन है।
- मिशन की अवधि: 14 दिन
- प्रक्षेपण स्थल: फ्लोरिडा में कैनेडी अंतरिक्ष केंद्र
- प्रक्षेपण यान: स्पेसएक्स का फाल्कन 9 रॉकेट।
- यह मिशन नासा के सहयोग से आयोजित किया गया है।

मिशन के उद्देश्य -

- **वैज्ञानिक अनुसंधान:** चिकित्सा, पदार्थ विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकास सहित विभिन्न क्षेत्रों में सूक्ष्मगुरुत्व प्रयोगों का संचालन करना।
- **वाणिज्यिक विकास:** एक्सिओम स्पेस अपने भावी वाणिज्यिक अंतरिक्ष स्टेशन के लिए प्रौद्योगिकी और प्रक्रियाओं का परीक्षण कर रहा है।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** इसमें अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष यात्री शामिल हैं, जिन्हें उनके गृह देशों या निजी संस्थानों द्वारा प्रायोजित किया जाता है। इससे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।
- **अंतरिक्ष पर्यटन एवं प्रशिक्षण:** अंतरिक्ष यात्रा में रुचि रखने वाले निजी व्यक्तियों को प्रशिक्षण एवं उड़ान के अवसर प्रदान करना।

अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के बारे में -

- अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) अंतरिक्ष में अब तक का सबसे बड़ा मानव निर्मित ढाँचा है, जिसे 20 नवंबर 1998 को प्रक्षेपित किया गया था और यह 2011 से लगातार अंतरिक्ष यात्रियों के निवास स्थल के रूप में कार्य कर रहा है।
- यह एक संयुक्त परियोजना है जिसमें कई अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसियाँ शामिल हैं:
 - **NASA:** नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (अमेरिका)
 - **Roscosmos:** रूसी संघीय अंतरिक्ष एजेंसी
 - **ESA:** यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी
 - **JAXA:** जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी
 - **CSA:** कनाडाई अंतरिक्ष एजेंसी
- ISS पृथ्वी की परिक्रमा लगभग 400 किलोमीटर की ऊँचाई पर करता है।
- इसकी गति लगभग 28,000 किलोमीटर प्रति घंटा है, जिससे यह हर 90 मिनट में पृथ्वी की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है।
- **मुख्य उद्देश्य:**
 - अंतरिक्ष और सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण (microgravity) स्थितियों की हमारी समझ को बढ़ाना।
 - वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देना।
 - अंतरिक्ष अन्वेषण में अंतरराष्ट्रीय सहयोग का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करना।

एक्सओम 4 मिशन का महत्व -

- **भारतीय मानव अंतरिक्ष उड़ान में अग्रणी:** एक्स-4 में भागीदारी 1984 में राकेश शर्मा के बाद किसी भारतीय की मानव अंतरिक्ष उड़ान में वापसी का प्रतीक है, जो वैश्विक मानव अंतरिक्ष अन्वेषण में भारत की नई उपस्थिति का प्रतीक है।
- **अत्याधुनिक अनुसंधान:** इस मिशन में अंतरिक्ष जीव विज्ञान और जैव इंजीनियरिंग में भारत के नेतृत्व में सात प्रयोग शामिल हैं। ये जीवन रक्षक प्रणालियों और भविष्य के गहरे अंतरिक्ष मिशनों के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- **गगनयान और बीएस रोडमैप का समर्थन:** एक्स-4 मिशन गगनयान मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम और 2035 तक नियोजित भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (बीएसएस) के लिए एक तकनीकी और अनुभवात्मक सेतु के रूप में कार्य करता है, जो महत्वपूर्ण व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है।
- **क्षमता निर्माण:** भारतीय वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और मिशन योजनाकारों को जटिल अंतरिक्ष मिशनों, अंतरिक्ष चिकित्सा, कक्षीय परिचालन और जैव अंतरिक्ष विज्ञान के प्रबंधन में प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करता है - जो भविष्य के स्वदेशी मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रमों के लिए महत्वपूर्ण है।
- **विज्ञान कूटनीति:** अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सहयोग में भारत की भूमिका को बढ़ाती है, एजेंसियों और अन्य वैश्विक अनुसंधान संस्थानों के साथ साझेदारी को बढ़ावा देती है।
- **STEM प्रेरणा:** यह भारतीयों की नई पीढ़ी को STEM, अंतरिक्ष अनुसंधान और नवाचार में करियर बनाने के लिए प्रेरित करेगा।
- **स्वदेशी अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा:** सूक्ष्मगुरुत्व अनुसंधान, जैव-इंजीनियरिंग और मानव अंतरिक्ष उड़ान प्रौद्योगिकियों में घरेलू क्षमताओं को बढ़ावा, जिससे अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों में आत्मनिर्भरता और भविष्य के निर्यात में योगदान मिलेगा।

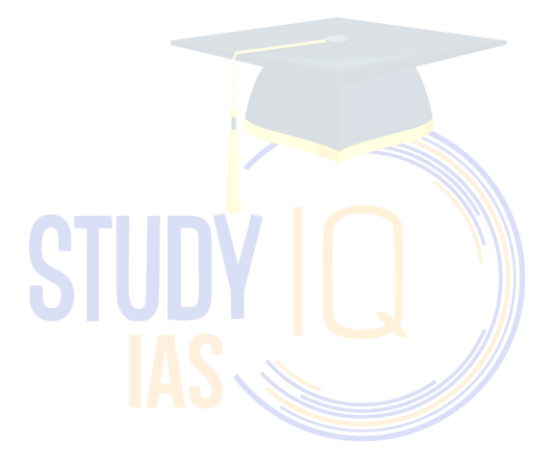
Ax-4 मिशन पर भारत के नेतृत्व में किए गए 7 प्रयोग कौन से हैं ?

- **अंतरिक्ष विकिरण के अंतर्गत सूक्ष्म शैवाल वृद्धि:**
 - **नेतृत्व:** अंतर्राष्ट्रीय आनुवंशिक इंजीनियरिंग एवं जैव प्रौद्योगिकी केंद्र (आईसीजीबी) और राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान संस्थान (एनआईपीजीआर)
 - **उद्देश्य:** यह अध्ययन करना कि सूक्ष्म शैवाल अंतरिक्ष विकिरण और सूक्ष्मगुरुत्व के प्रति किस प्रकार प्रतिक्रिया करते हैं और अनुकूलन करते हैं।
 - **महत्व:**
 - सूक्ष्म शैवाल जैव-पुनर्जननशील जीवन समर्थन के लिए आशाजनक हैं - वे ऑक्सीजन उत्पन्न कर सकते हैं और भोजन के रूप में काम कर सकते हैं।
 - अंतरिक्ष में उनके विकास और उत्पत्ति पैटर्न को समझने से लंबी अवधि के मिशनों के लिए बंद-लूप पारिस्थितिकी तंत्र को डिजाइन करने में मदद मिल सकती है।
 - शैवाल में डीएनए मरम्मत तंत्र की जानकारी जैव प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष कृषि में सहायक हो सकती है।
- **सूक्ष्मगुरुत्व में बीज अंकुरण:**
 - **नेतृत्व:** कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़, और आईआईटी धारवाड़
 - **उद्देश्य:** सूक्ष्मगुरुत्व में मूंग और मेथी के बीजों के अंकुरण और प्रारंभिक वृद्धि का अवलोकन करना।
 - **महत्व:**
 - बीज भावी अंतरिक्ष निवासियों के लिए प्राथमिक खाद्य संसाधन हैं।
 - सूक्ष्मगुरुत्व में बीज किस प्रकार अंकुरित होते हैं और बढ़ते हैं, इसका अध्ययन हमें अंतरिक्ष में पौधों की कार्यिकी के बारे में जानकारी देता है।

- इसके परिणाम अंतरिक्ष स्टेशनों और चंद्र ठिकानों पर खाद्य फसलों की खेती के प्रयासों का मार्गदर्शन करेंगे।
- **अंतरिक्ष में टार्डिग्रेड्स पर जीन अभिव्यक्ति अध्ययन:**
 - **नेतृत्व:** भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बैंगलोर
 - **उद्देश्य:** अंतरिक्ष विकिरण और सूक्ष्मगुरुत्व के संपर्क में आने वाले टार्डिग्रेड्स (water bears) में अस्तित्व, अनुकूलन और जीन अभिव्यक्ति का विश्लेषण करना।
 - **महत्व:**
 - टार्डिग्रेड्स अपनी अत्यधिक लचीलेपन के लिए प्रसिद्ध हैं - वे विकिरण, निर्वात और तापमान की चरम स्थितियों में भी जीवित रह सकते हैं।
 - इस प्रयोग से ऐसी सहनशीलता के लिए उत्तरदायी जीन और आणविक मार्गों का पता चल सकता है।
 - इस अध्ययन के निष्कर्ष मानव अंतरिक्ष स्वास्थ्य, वृद्धावस्था अनुसंधान और जैव प्रौद्योगिकी में योगदान दे सकते हैं।
- **सूक्ष्मगुरुत्व के अंतर्गत मांसपेशी पुनर्जनन (मायोजेनेसिस-इसरो):**
 - **नेतृत्व:** स्टेम सेल विज्ञान और पुनर्योजी चिकित्सा संस्थान (इनस्टेम)
 - **उद्देश्य:** यह जांच करना कि उपापचयी पूरक सूक्ष्मगुरुत्व में मांसपेशियों की मरम्मत और पुनर्जनन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।
 - **महत्व:**
 - अंतरिक्ष यात्रियों को भारहीनता के कारण अंतरिक्ष में आमतौर पर मांसपेशियों की हानि होती है।
 - मांसपेशी कोशिका वृद्धि और चयापचय का अध्ययन करने से मांसपेशी शोष को रोकने या उसका उपचार करने के तरीके पता चल सकते हैं।
 - इस अंतर्दृष्टि से पृथ्वी पर मांसपेशी क्षय के लिए चिकित्सा विकसित करने में मदद मिल सकती है (उदाहरण के लिए, बुजुर्ग या बिस्तर पर पड़े रोगियों में)।
- **कक्षीय वातावरण में इलेक्ट्रॉनिक डिस्प्ले के साथ मानव अंतःक्रिया:**
 - **नेतृत्व:** भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी)
 - **उद्देश्य:** यह समझना कि सूक्ष्मगुरुत्व में अंतरिक्ष यात्री टचस्क्रीन और इलेक्ट्रॉनिक डिस्प्ले के साथ किस प्रकार संपर्क करते हैं।
 - **महत्व:**
 - सूक्ष्मगुरुत्व समन्वय, धारणा और सूक्ष्म मोटर कौशल को प्रभावित करता है।
 - इन निष्कर्षों से अंतरिक्ष-अनुकूल इंटरफेस और नियंत्रण उपकरणों के डिजाइन में सुधार होगा।
 - इसके परिणाम पृथ्वी पर विमानन और अन्य क्षेत्रों के लिए सुरक्षित कॉकपिट या उपकरण डिजाइन के बारे में भी जानकारी दे सकते हैं।
- **सूक्ष्मगुरुत्व के तहत साइनोबैक्टीरिया में पोषक तत्वों का उपयोग**
 - **नेतृत्व:** आईसीजीईबी
 - **उद्देश्य:** तुलना करना कि साइनोबैक्टीरिया सूक्ष्मगुरुत्व में वृद्धि और चयापचय के लिए विभिन्न नाइट्रोजन स्रोतों (यूरिया बनाम नाइट्रेट) का उपयोग कैसे करते हैं।
 - **महत्व:**
 - साइनोबैक्टीरिया बंद लूप जैव-पुनर्जनन प्रणालियों के लिए महत्वपूर्ण हैं - जो नाइट्रोजन को स्थिर करने और ऑक्सीजन का उत्पादन करने में सक्षम हैं।
 - अंतरिक्ष में पोषक तत्वों के अवशोषण का अध्ययन करने से अंतरिक्ष आवासों के लिए जैव-इंजीनियरिंग प्रणालियों को अनुकूलित करने में मदद मिलती है।

- इस प्रयोग का टिकाऊ कृषि और अपशिष्ट पुनर्चक्रण पर भी प्रभाव पड़ सकता है।
- **फसल वृद्धि और उपज पर सूक्ष्मगुरुत्व का प्रभाव:**
 - **नेतृत्व:** भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी) और केरल कृषि विश्वविद्यालय (केएयू)
 - **उद्देश्य:** दीर्घकालीन सूक्ष्मगुरुत्व स्थितियों में समग्र फसल वृद्धि और उपज प्रतिक्रिया का मूल्यांकन करना।
 - **महत्व:**
 - अंतरिक्ष में फसल शरीरक्रिया पर व्यापक डेटा, पृथ्वी से बाहर भविष्य में खाद्य उत्पादन की योजना बनाने के लिए आवश्यक है।
 - स्टेशनों और अंतरग्रहीय मिशनों पर जीवन-सहायक मॉड्यूलों के लिए सबसे उपयुक्त फसल किस्मों और विकास तकनीकों का चयन करने में सहायता करता है।
 - चन्द्रमा या मंगल ग्रह पर ग्रीनहाउस के लिए आधारभूत ज्ञान का निर्माण करता है।

स्रोत: [Economic Times](#)



यूरेशिया में महत्वपूर्ण मोड़

संदर्भ

हेग में 2025 में होने वाले नाटो शिखर सम्मेलन को एक महत्वपूर्ण क्षण के रूप में चित्रित किया जा रहा है, जिसमें लगातार ट्रांसाटलांटिक तनाव, यूक्रेन पर रूसी आक्रमण और गठबंधन के बारे में ट्रम्प के संदेह के कारण नाटो की प्रासंगिकता और एकजुटता पर सवाल उठ रहे हैं।

नाटो के बारे में -

- **मुख्यालय:** ब्रुसेल्स, बेल्जियम।
- **मित्र देशों की कमान संचालन का मुख्यालय:** मोन्स, बेल्जियम
- यह एक अंतर-सरकारी सैन्य गठबंधन है।
- **उत्पत्ति:** द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सोवियत संघ द्वारा उत्पन्न खतरे का मुकाबला करने और यूरोप में लोकतंत्र और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए इसकी स्थापना की गई थी।
 - नाटो की स्थापना संधि, उत्तरी अटलांटिक संधि, पर 4 अप्रैल, 1949 को वाशिंगटन, डी.सी. में हस्ताक्षर किये गये थे।
- **सदस्य:** नाटो के मूल 12 सदस्य बेल्जियम, कनाडा, डेनमार्क, फ्रांस, आइसलैंड, इटली, लक्जमबर्ग, नीदरलैंड, नॉर्वे, पुर्तगाल, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका थे।
 - वर्तमान में इसके 32 सदस्य देश हैं (स्वीडन 2024 में इसमें शामिल हुआ)।

- उत्तरी अटलांटिक संधि के अनुच्छेद 10 में यह बताया गया है कि किस तरह से देश गठबंधन में शामिल हो सकते हैं। इसमें कहा गया है कि सदस्यता किसी भी "यूरोपीय देश के लिए खुली है जो इस संधि के सिद्धांतों को आगे बढ़ाने और उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र की सुरक्षा में योगदान देने की स्थिति में है"।
- किसी देश को गठबंधन में शामिल करने का निर्णय, सभी मित्र राष्ट्रों के बीच आम सहमति के आधार पर, नाटो की प्रमुख राजनीतिक निर्णय लेने वाली संस्था, उत्तरी अटलांटिक परिषद द्वारा लिया जाता है।

यूरेशियाई शक्तियों को सुरक्षा समस्याओं के राजनीतिक उत्तर क्यों खोजने चाहिए -

- **बदलती अमेरिकी प्रतिबद्धताएँ:** चूंकि अमेरिका यूरोप और मध्य पूर्व की रक्षा में अपनी भूमिका पर सवाल उठा रहा है, इसलिए अमेरिकी सैन्य सहायता पर पारंपरिक निर्भरता अब सुनिश्चित नहीं रह गई है।
- **सैन्य खर्च की सीमाएं:** रक्षा बजट (जो अब सकल घरेलू उत्पाद का 5% है) को केवल रक्षा पर बढ़ाने से क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता, ऐतिहासिक शिकायतों और बदलते गठबंधनों (जैसे कि चीन, रूस, दक्षिण कोरिया, भारत, चीन, भारत, बांग्लादेश, बांग्लादेश, बांग्लादेश, बांग्लादेश, बांग्लादेश, बांग्लादेश) में निहित जटिल सुरक्षा दुविधाओं का समाधान नहीं हो सकता है। यूक्रेन में रूसी आक्रामकता या आर्मेनिया-अज़रबैजान संघर्ष।)
- **भू-राजनीतिक बदलाव:** यूक्रेन पर रूसी आक्रमण और मध्य पूर्व में पुनर्संरखण ने संवाद और क्षेत्रीय सहयोग सहित घरेलू राजनीतिक समाधान की आवश्यकता को उजागर किया है।
- **सामरिक स्वायत्तता:** जर्मनी की "ज़ाइटनवेंडे" नीति उसे केवल अमेरिकी सुरक्षा पर निर्भर रहने के बजाय यूरोप के लिए सुरक्षा प्रदाता के रूप में परिवर्तित कर रही है।
 - एशिया में, जापान ने अधिक सक्रिय रक्षा भूमिका निभाने के लिए अपने शांतिवादी संविधान को संशोधित करना शुरू कर दिया है, और भारत ने अमेरिका से परे अपने रक्षा उद्योग और

सुरक्षा साझेदारियों में निवेश किया है, जैसे कि फ्रांस और क्वाड (जापान, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, भारत) के साथ।

Zeitenwende नीति की मुख्य विशेषताएं -

- **रक्षा व्यय में बड़ी वृद्धि:** जर्मनी ने अपनी सेना (बुंडेसवेयर) के आधुनिकीकरण के लिए विशेष निधि में 100 बिलियन यूरो (लगभग 110 बिलियन डॉलर) देने का वादा किया।
 - रक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का कम से कम 2% खर्च करने के नाटो के लक्ष्य को पूरा करने और उससे अधिक खर्च करने का संकल्प लिया गया।
- **घातक हथियारों की आपूर्ति:** यूक्रेन को सीधे हथियार आपूर्ति करके दीर्घकालिक नीति को तोड़ा गया, जिससे संघर्ष क्षेत्रों में हथियार निर्यात करने की दशकों पुरानी अनिच्छा समाप्त हो गई।
- **रूस पर निर्भरता कम करना:** रूसी ऊर्जा (गैस, तेल, कोयला) पर जर्मनी की निर्भरता समाप्त करने के लिए त्वरित कदम उठाना, विकल्प तलाशना और ऊर्जा सुरक्षा में निवेश करना।

- **क्षेत्रीय सुलह:** सऊदी अरब और ईरान के बीच संबंधों को सामान्य बनाने जैसे प्रयास - जिन्हें चीन ने सुगम बनाया - तनाव कम करने में राजनीतिक बातचीत की शक्ति को प्रदर्शित करते हैं, यहां तक कि उन जगहों पर भी जहां दशकों से सैन्य टकराव विफल रहा है।
 - मध्य एशिया में, उज्बेकिस्तान और कजाकिस्तान जैसे देश बाहरी शक्तियों पर निर्भरता कम करने के लिए क्षेत्रीय सुरक्षा और आर्थिक साझेदारी का निर्माण कर रहे हैं।
- **एक नई व्यवस्था का जन्म:** चीन का उदय, रूस की नई मुखरता, अधिक स्वतंत्र यूरोप, तथा भारत की बढ़ती वैश्विक छवि, बहुध्रुवीय विश्व की ओर बदलाव का संकेत देते हैं।
 - इसके लिए गठबंधन (जैसे ब्रिक्स या शंघाई सहयोग संगठन) और नए कूटनीतिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है, न कि केवल पुराने अमेरिका-केंद्रित गठबंधनों या सैन्य समझौतों पर निर्भर रहना।

भारत के लिए निहितार्थ -

- यूरोप, मध्य पूर्व और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में फैली भारत की अनूठी भौगोलिक स्थिति और रणनीतिक स्थिति, चुनौतियां और अवसर दोनों प्रदान करती है।
- भारत सक्रिय रूप से:
 - यूरोप के साथ रणनीतिक संबंधों को गहरा कर रहा है।
 - मध्य पूर्व में सभी प्रमुख अभिनेताओं को शामिल कर रहा है।
 - चीन के साथ संबंधों को स्थिर कर रहा है और आसियान, ऑस्ट्रेलिया, जापान और दक्षिण कोरिया के साथ संबंधों को मजबूत कर रहा है।
 - अमेरिका के भीतरमुखी रुख के बावजूद उससे मजबूत संबंध बनाए रखना।
- इन कदमों का उद्देश्य भारत की "कम होती निश्चितताओं" की दुनिया में नेविगेट करने और अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को अधिकतम करने की क्षमता सुनिश्चित करना है।

स्रोत: [Indian Express](#)